ماہنامہ
شعاعِ عمل
اپریل ۲۰۱۵ء
لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ كُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِيْنٌ
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

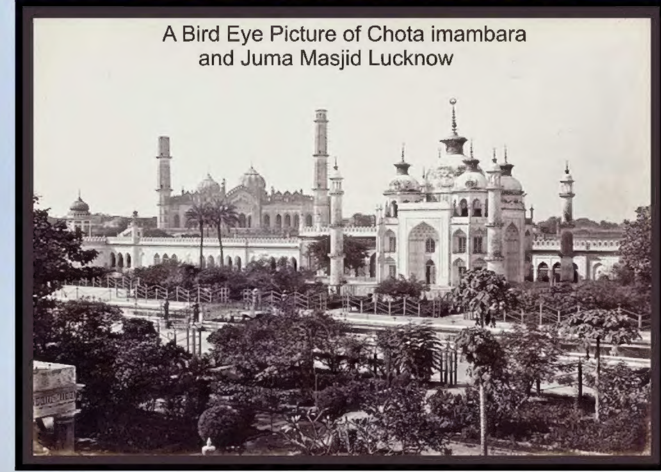




نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

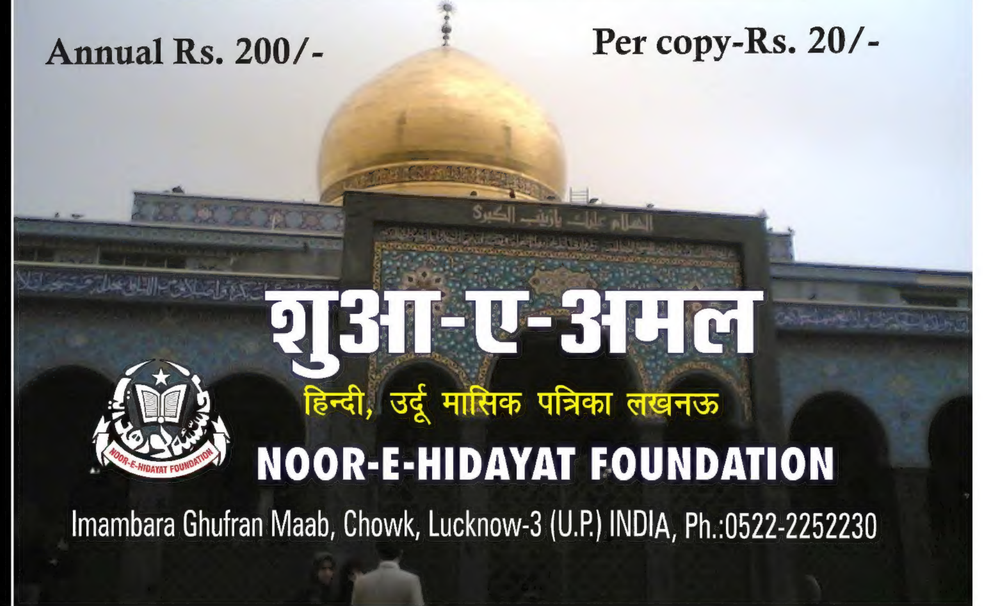
R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

April 2015 **SHUA-E-AMAL** Lucknow


A Bird Eye Picture of Chota imambara and Juma Masjid Lucknow

Annual Rs. 200/-

Per copy-Rs. 20/-



शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 20/-
Annual 200/-

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल 2015 ई०

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 11 — अंक 10

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:
मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी, अलीगढ़
- डॉ0 महदी ख़्वाजा पीरी, ईरान
- सै0 हसन अब्बास नक़वी, मुम्बई
- मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- सै0 अहमद अब्बास नक़वी, मुम्बई
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै0 सैफ़ तक़ी नक़वी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

अध्यक्ष प्रचार प्रसार
माननीय **नवाब रज़ा** साहब, भोपाल

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक
क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी
आसिफ़ अब्बास नौगांवी, इमरान आग़ा, समद अब्बास

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ0 प्र0) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ0 प्र0) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

lEiknu lfefr

- ➪ डॉ0 अमानत हुसैन नक़वी
- ➪ वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- ➪ गौहर अली मुबारकपूर, आज़मगढ़
- ➪ मुहम्मद शादाब तफ़ज़्ज़ुली
- ➪ मज़हर हुसैन 'ताज' लखनवी
- ➪ शाहिद अली आज़मी
- ➪ नसीर हुसैन जलालपूरी
- ➪ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ➪ डॉ0 आरिफ़ अब्बास
- ➪ रेहान आलम, लखनऊ
- ➪ बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- ● tQj+gbq8 fjtehC; jwlplQ+eEcbZ
- ● bjQku g6j]C; jwlplQ+e/; çn'k
- ● dQ+rdhudeh]C; jwlplQ+ngyh

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ok'kZ vakndu

1– एक साल के लिए 200/-
2– पांच साल के लिए 800/-
3– लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

विषय सूची

vi§y 2015bZ
जमादिउस्सानीः 1436हि0

वहाबी मत का सत्य

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

fd'kr %1⁄27

lEiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

हाफ़िज़ इब्ने हजर की इसाबा में है कि हज़रत[स] ने उस्मान बिन मज़ऊन की लाश को चूमा उस समय आप[स] रो रहे थे।

रसूल[स] की मृत्यु के बाद भी आपके कक्ष और पवित्र रौज़ा (कब्र का भवन) और दूसरी वह चीज़ें जो आपसे जुड़ी हुई थीं उनको मुसलमान चूमते आए हैं और उलमा सहमत रहे इमाम अहमद बिन हम्बल के एक मित्र इब्राहीम हरबी के लिए शैख मनसूर हम्बली ने हाशियाए इकनआ में लिखा है कि उन्होंने कहा "नबी के कक्ष को चूमना सुन्नत है (अच्छा है)।"

महदी अब्बासी के पास एक व्यक्ति जूते लाया, इस दावे के साथ कि यह रसूलल्लाह[स0] ने पहने हैं। इसके बाद कहा कि मुझे मालूम है कि यह व्यक्ति झूठ कहता है रसूल[स] के पवित्र पांव से यह जूते छुए तक नहीं फिर भी इसलिए खड़ा होकर चूमा आँखों से लगाया कि आम मुसलमान मुझ पर निरादर करने का आरोप लगाएंगे कि मेरे पास रसूलल्लाह[स0] को जूते लाये गये और मैंने उनका आदर नहीं किया। इसको शैख इब्ने अरबी ने "महाज़रातुल अबरार" में लिखा है। इससे पता चलता है कि पैग़म्बर से जुड़ी वस्तुओं का आदर सारे मुसलमानों में होता था। आदर व बरकत लेने का एक तरीक़ा छूना भी है चाहे अपने हाथ को हज़रत के शरीर तक पहुँचाकर या आपसे ख्वाहिश करना कि आप उस पर हाथ फेर दें। इन दोनों बातों के सही होने का सबूत स्वंय आपके कार्य व आज्ञा से मिलता है। हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने इसाबा में लिखा है कि बनी बक्कार का एक प्रतिनिधि मण्डल (Defgation) पैग़म्बर[स0] के पास आया उनमें मअ़विया बिन सूर बिन उबादा उनके सरदार थे जिनकी आयु सौ वर्ष की थी। यह सब मुसलमान हुए और जाते समय मुआविया ने यह चाहत की कि मैं आपके शरीर को स्पर्श करके बरकत पाना चाहता हूँ। हज़रत ने उसे आज्ञा दे दी। फिर उन्होंने कहा कि मेरा बेटा बुश्र बड़ा शिष्ट है आप[स] उसके चेहरे पर अपना हाथ फेर दीजिए। हज़रत ने उसके चेहरे पर हाथ फेर दिया।

हज़रत के पवित्र बालों के बटवारे के बारे में अहले सुन्नत की सिहाए सित्ता (हदीसों के छः बड़े संकलन जिन्हें अहले सुन्नत किताब कुरआने मजीद के बाद हर किताब से सर्वोपरि मानते हैं) से पता चलता है कि वह स्वंय हज़रत[स] की आदेश से बटते थे। जैसा कि सहीहे मुस्लिम में है कि हज़रत[स] ने अबू तलहा अन्सारी से जिन्होंने आपके[स] सिर से पवित्र केशों को साफ़ किया था, से कहा कि इन्हें लोगों में बाँट दो।

"महाज़रातुल अवाइल" में है कि उन बालों को अबू तलहा ने हज़रत[स] की आज्ञा से इसलिए बाँटे कि वह सहाबा के पास बरकत के लिए रहें। "जामए बैनुस्सहीहैन" में अब्दुल्लाह बिन मुवहब की रिवायत है कि मेरे घर वालों ने मुझे रसूलल्लाह[स] की बीवी जनाबे उम्मे सलमा के पास पानी के एक प्याले के साथ भेजा। वह चाँदी का एक बर्तन लाई जिसमें हज़रत[स] के पवित्र केश थे। उनमें से कुछ केश उन्होंने उस प्याले में डाल दिए। और जब कोई बीमार होता था तो वह उसी बर्तन से निकाल कर केश डाल देती थीं। और वह बीमार उस पानी को पीता था। रावी का बयान है कि मैंने झुक कर देखा उस बर्तन में तो कुछ लाल रंग के केश थे।

क़ाज़ी अय्याज़ ने शफ़ा में हज़रत के चमत्कार और बरकत में लिखा है कि हज़रत[स] के कुछ केश

ख़ालिद बिन वलीद की टोपी में थे जिसकी वजह से वह हर लड़ाई में विजयी होते थे।

बुख़ारी की रिवायत इब्ने सीरीन से है कि उन्होंने उबैदा से कहा कि हमारे पास कुछ पवित्र केश (हज़रत के) हैं जो हमें अनस या उनके घर वालों से मिले हैं। उन्होंने कहा अगर उनमें से एक केश मेरे पास होता तो वह मेरे लिए दुनिया और जो कुछ इसमें है से भी अच्छा होता।

इसी तरह जो वस्तु भी कुछ भी हज़रत[स] से जुड़ी हुई हो उसे सदैव बरकत वाली और पवित्र समझा गया अतः क़ाज़ी अय्याज़ शफ़ा में लिखते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर रसूल[स] के मिम्बर के उस स्थान पर जहाँ हज़रत[स] बैठते थे हाथ रखते थे और उसे बरकत के लिए अपने मुख पर मलते थे।

हाफ़िज ईब्ने हजर की 'इसाबा' में है कि जब यज़ीद बिन असवद की मृत्यु का समय निकट आया तो हज़रत[स] के सहाबी वासला बिन असक़अ उनके निकट आए और उनका हाथ अपने मुँह पर मला और सीने पर रखा और कहा कि यह वो हाथ है जो हज़रत के पाक हाथों से छुआ हुआ है।

मुसनदे अहमद में उम्मे सुलैम से रिवायत है कि हज़रत[स] ने एक मश्क (पानी भरने की थैली) से जो उनके यहाँ थी पानी पिया तो उस मश्क का मुहँ जो हज़रत के पवित्र दामन से छू गया था अलग कर के शुभ लाभ (बरकत) के लिए रख लिया गया और ऐसा ही वाक़ेआ इब्ने माजाह और तिर्मिज़ी ने कबशाह अनसारिया के बारे में लिखा है और तिरीमज़ी ने 'हसन सही' लिखा है।

"जमऐबैनुस्सहीहैन" में सहल बिन सअ़द सहाबी के बारे में लिखा है कि उन्होंने एक चादर हज़रत[स] से माँगी जब लोगों ने उस चादर के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने इसे इसलिए लिया है कि यह मेरा कफ़न हो और इस प्रकार में क़ब्र की यातना से बच जाऊँ।

क़ाज़ी अय्याज़ की शिफ़ा में है कि सहाबी लोग आपके[स] चिन्हों को बड़ी–बड़ी क़ीमतों पर पाते थे।

यह सब साक्ष्य इस मतलब के साबित करने के लिए पर्याप्त हैं। वहाबी लोग जो अपने आपको अहले सुन्नत में गिनते हैं और उन्हीं के सहमत लोग जो भारत में अपने आपको अहले हदीस कहते हैं। मगर उनका धर्म जो हज़रत से तवस्सुल का विरोध है और आपसे जुड़ी चीज़ों के आदर के ख़िलाफ़ है सुन्नत (रसूल[स०] का चलन/पाक प्रवृत्ति) के भी ख़िलाफ़ और हदीस के अनुसार से भी ग़लत है।

rhljkv/;k;
ogkch fopkj vkSj ;ko lkysghu ¼nkpkjhx.k½ ds ckjs esa

इब्ने अब्दुलवहाब को इन लोगों की बड़ाई व बुजुर्गी महिमा से कड़ा इन्कार है। उनका विश्वास यह था कि उनमें से किसी से भी तवस्सुल और अल्लाह के यहाँ शिफ़ाअत की चाहत रखना उन्हें खुदा समझ लेना है और इबादत में उसके साथ दूसरों को मिला लेना है।

इसे उन्होंने और उनके मानने वालों ने बड़ी–लम्बी बातों के साथ लिखा है जिनमें से कुछ के विषय को हम उनके विचारों को प्रकट करने के लिए लिखते हैं। फिर उनके विचारों की एक–एक करके काट की जाऐगी।

स्वंय इब्ने अब्दुल वहाब ने अपनी किताब "अत्तौहीद" में उन क़ुरआन की आयतों को लिखने के बाद जो तौहीद (अल्लाह को एक मानना) के बारे में है और दूसरे खुदाओं की इबादत (भक्ति) करने वालों की काट में लिखा है किः

"यह शिर्क जो इन आयतों और ऐसी ही दूसरी आयतों का अभिप्राय है इसमें सम्मिलित हैं क़ब्रों के पूजने वालों, नबियों और फरिश्तों और बड़े धार्मिक पुरूषों की उपासना करने वालों का शिर्क। यही अरब में जाहिलियत के समय का शिर्क था जिसके समाप्त करने के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफा[स] आए थे कि वह उनसे दुआ मांगते थे और उनकी ओर आश्रय लेते थे और उनसे मांग करते थे ख़ुदा के यहाँ उनको अपना माध्यम मानते थे जैसा कि क़ुरान मजीद की बहुत सी आयतों में आया है। यद्यपि वह उन्हें आसमान,

धरती या किसी एक कण का भी ख़ालिक़ (सृजन हार) नहीं समझते थे, मगर क्योंकि उनकी उपासना करते थे अतः वह मुशरिक कहलाए तो इसी प्रकार यह लोग जो औलिया (ख़ुदा के 'दोस्त')व सालेहीन (सदाचारी/नेक लोग) का वास्ता देते हैं उनसे दुआ मांगते हैं।"

इसमें सबसे मूलभूत ग़लती यह है कि क़ब्रों की ज़ियारत करने वालों औलिया व मुक़र्रेबीन (खुदा के पास किये हुओं) का आदर करने वालों को उनकी उपासना करने वाला कहा गया है। इसलिए उपासना के अर्थ को समझना होगा कि उपासना का अर्थ क्या है?

"इबादत् (उपासना) वास्तव में किसी ख़ास काम का नाम नहीं है बल्कि ये वह काम है जो किसी को खुदा समझने की नियत/मन से किया जाए। इसी लिए बच्चों का अपने माँ बाप के सामने झुकना और अनपढ़ का एक ज्ञानी के सामने झुकना। एक उम्मती का सादात के सामने झुकना, किसी भी छोटे का अपने बड़े के सामने झुकना उपासना नहीं है। मगर पारसियों का आग के सम्मुख झुकना और मूर्तियों की पूजा करने वालों का मूर्ती के सम्मुख झुकना उपासना है। इससे पता चला की शिर्क का रिश्ता किसी कार्य से नहीं बल्कि विचार और आस्था से है। हो सकता है किसी को सजदा किया जाए मगर वह उपासना उसकी न हो और हो सकता है कि केवल आँख का इशारा हो और वह उपासना हो।

मुशरिक अपनी मूर्तियों को खुदा समझते थे। अतः कहते थे कि हम उनकी उपासना करते हैं। मगर मुसलमान जो रसूलल्लाह[स] या किसी और अल्लाह के यहाँ पहुँच रखने वाले का आदर करते हैं उनसे पूछा जाए तो वह कहेंगे कि हम उनकी उपासना नहीं करते उपासना अल्लाह की करते हैं। हाँ हम उनका आदर सत्कार करते हैं। यहीं से मुसलमानों में और मुशरिकों में अन्तर स्पष्ट है।

इस प्रकार का आदर सत्कार शिर्क नहीं हो सकता जबकि माता पिता के लिए स्वंय अल्लाह ने आदेश दिया है कि उनके सामने अपने को गिरा के बेबसी के साथ झुकाए रहा करो। यह आदर का आदेश नहीं तो और क्या है?

और अल्लाह कहता है :

"जो अल्लाह की निशानियों का आदर करे तो यह दिलों की परहेज़गारी (सयंम) का एक हिस्सा है।" और इसी प्रकार अल्लाह आदरणीय के आदर करने के बारे में हज़रत को आदेश दिया कि अपने कंधों को झुकाइए उसके लिए कि जो मोमेनों में से आपकी पूरी इताअत (अनुसरण) करने वाला है।"

सबसे बड़ी बात यह कि स्वंय अल्लाह ने फरिश्तों को आदेश दिया कि वह जनाबे आदम[स] को सजदा करें और इब्लीस को सजदा न करने पर अपने यहाँ से निकाल दिया और उसे धिक्कारा बना दिया और सुरए 'युसुफ़' में है कि हज़रत युसुफ़[अ] ने सपने में देखा कि ग्यारह सितारे और चाँद सूरज उन्हें सजदा कर रहे हैं फिर इसका अर्थ इस प्रकार मिला कि उन्होंने अपने पिता को जो अल्लाह के नबी हज़रत याकूब[अ] थे और अपनी माता को ऊँचे आसन पर बिठाया तो उन दोनों ने और सब भाईयों ने जो ग्यारह थे उन्हें सजदा किया।

इस्लामी शरीअत (धर्म विधि) में अल्लाह के अनिरिक्त किसी के लिए भी सजदा ठीक (मान्य) ना होना एक शरियत का हुक्म है। मगर पुरानी शरीयतों में ऐसा नहीं था यह इस बात का अचूक और सटीक सबूत है कि वो शिर्क नहीं है क्योंकि उसूलेदीन में सब नबी एक हैं। जो चीज़ शिर्क में हो वह कभी भी किसी भी शरियत में मान्य नहीं हो सकती।

इससे यह बात तो अटूट प्रमाण को पहुँच गई कि हर आदर सत्कार शिर्क नहीं है। उपासना की बुनियाद खुदा समझने पर है। जो मुसलमान नबियों, औलिया व मुक़र्रेबीन (पहुँचे हुए बन्दों) का आदर सत्कार करके उनके दिमाग़ में उनके ख़ुदा होने का विचार बिल्कुल नहीं होता बल्कि यक़ीन के साथ सच्चे मन से जानते हैं कि यह अल्लाह के बन्दे (दास) हैं जिन्होंने अपना पूरा जीवन उसकी उपासना/भक्ति में लगा दिया और उसके

मार्ग में उन लोगों ने बलिदान किये। इस कारण वह हमारे आदर सत्कार के लायक (पात्र) हुए तो यह आदर वास्तव में अल्लाह का आदर है जो असल तौहीद है और यह आदर अल्लाह के अन्य का जो अल्लाह से खास लगाव के कारण है आदर उन लोगों का है मगर वह उपासना उनकी नहीं है बल्कि उसकी उपासना है जिस की ओर उन के लगाव से उनका आदर सत्कार हो रहा है।

और दुआ सीधे उनसे नहीं होती कि हम अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अल्लाह से बेपरवाह होकर इन्हें काफ़ी समझते हैं, अर्थ यह होता है कि यह जो अल्लाह के यहाँ उसकी उपासना और भक्ति के कारण वे पहुँचे हुए है, हमारे लिए वह अल्लाह के यहाँ दुआ करें और यह सब मोमेनों के लिए आपस में आया है कि एक की दुआ दूसरे के बारे में ज़्यादा कुबूल होती है और चूँकि हम उन्हें जीवित समझते हैं जिस प्रकार कुरान में शहीदों के बारे में आया है, तो हम मदद के लिए जो उन्हें सम्बोधित करते हुए कहते हैं उसका भी अर्थ यह होता है कि वह हमारे लिए अल्लाह से दुआ करेंगे या उसकी आज्ञा से स्वंय हमारी मदद करेंगे और इसी प्रकार अल्लाह के काम को करने की अपेक्षा दूसरे के लिए भी साबित है जैसे मृत्यु का देना अल्लाह का काम है। अल्लाह कहता है कि अल्लाह मौत देता है उनकी मृत्यु के समय और दूसरे स्थान पर कहता है कि तुम्हें मृत्यु देता है मृत्यु का फ़रिश्ता (यमराज) और तीसरे स्थान पर इस कार्य का करना उन फ़रिश्तों की ओर किया गया है जो यमराज के अधीन है और कहता गया कि वह जिन्हें फ़रिश्ते मृत्यु देते हैं मगर यह कि वह अपनी जानों पर अत्याचार करते हैं इस प्रकार रोज़ी रोटी/आजीविका देना या संतान देना किसी दूसरे की ओर तत्सम्बन्धित हो तो इसमें कोई बुराई नहीं है। जबकि कहने वाला यही विचार रखता हो कि वास्तव में देने वाला अल्लाह ही है और यह अगर देंगे तो उसके आदेश ही से या स्वयं उसके यहाँ सिफारिश के द्वारा।

सुनने अबूदाऊद में खुबैर बिन मुतइम की रिवायत है कि एक आराबी (बद्दु/असभ्य अरब) ने हज़रत[स] के पास आकर सूखे का हाल सुनाया और उसका मतलब ये था कि हज़रत वर्षा के लिए दुआ करें मगर उसने ये कहा कि हम अल्लाह से सिफ़ारिश कराते हैं आप[स] के यहाँ और आप[स] की शफ़ाअत चाहते हैं अल्लाह के यहाँ। पहले वाक्य पर आप[स] ने कई बार अल्लाह की सराहना की और कहा वह बहुत बड़ा है इससे कि उसको किसी के पास सिफ़ारिश के लिए लाया जाए। इससे पता चलता है कि अपने इस वाक्य पर कि आप अल्लाह के यहाँ सिफ़ारिश कीजिए कोई आपत्ति नहीं की।

हाँ जो व्यक्ति उन महापुरूषों को अल्लाह के बराबर समझे और अल्लाह के मुक़ाबले में उन्हें दुआओं का कबूल करने वाला समझे उसे हम भी मुशरिक समझते हैं। इब्ने अब्दुल वहाब का कहना है कि: "जो कुछ मुसलमानों को औलिया व सालेहीन के साथ आस्था है यही बस अरब के मुशरिक करते थे।'' यह कुरान की नज़र में ठीक नहीं है। कुराने मजीद से साबित है कि वह अपनी मूर्तियों को 'अल्लाह' कहते थे अर्थात् खुदा समझते थे वह खुदा की उपासना (भक्ति) से अपने को बेपरवाह समझते थे। अतः कुरान में है कि "उन्होंने पैग़म्बर के लिए कहा कि यह हमें हमारे खुदाओं से भटकाए देता है।"

सुरए साफ़्फ़ात में है कि वह कहते थे कि "क्या हम एक दीवाने कवि की वजह से अपने खुदाओं को छोड़ दें?"

सुरा सॉद में है उनकी ज़बानी रसूल[स] के लिए कि इसने बहुत से खुदाओं को एक खुदा बना दिया। यह अजीब बात है।

सुरा शुअ़रा में है जहन्नम वासियों की ज़बानी कि 'वह अपने खुदाओं से कहेंगे कि हम भटके हुए थे कि तुम्हें जगत के पालनहार के बराबर समझा। इससे पता चलता है कि वह अपने खुदाओं को अल्लाह के बराबर समझते थे। सुरा अहक़ाफ़ में है कि उन्होंने कहा "तुम आए हो कि हमें हमारे खुदाओं से हटाओं!"

✦✦✦

आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सय्यद अली नक़ी नक़वी रह०

y§kd %i ktQ$ j l S;n uS;j el w lkgc

अनुवादकः समद अब्बास शीश महल, लखनऊ

सय्यदुल उलमा मौलाना अली नक़ी साहब के देहान्त ने इस्लामी दुनिया को एक महान और प्रखर विद्वान और उच्चस्तरीय वक्ता से वंचित कर दिया। उन्होंने अपने जुबान और क़लम को इस्लाम के लिए वक़्फ़ कर दिया था। नाम, ख्याति और सांसारिक लाभ की चिन्ता से मुक्त वह आधी शताब्दी से अधिक समय तक भाषण और लेखन के द्वारा इस्लाम के प्रचार प्रसार में व्यस्त रहे और उनके सैकड़ों लेखों, प्रवचनों एंव भाषणों ने उपमहाद्वीप के ज़ेहनों में मज़हब की एक रौशन कल्पना पैदा की।

निम्न में मरहूम के व्यक्तित्व और इल्मी उपलब्धियों का बहुत संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जाता है :

सय्यदुल उलमा (जन्मः लखनऊ 26 रजब 1323 हि0 मुताबिक 1906 ई0) मशहूर आलिमे दीन गुफरानमआब मौलवी सय्यद दिलदार अली के वंश मे थे। सय्यदुल उलमा सय्यद अली नक़ी नक़वी इब्ने मुमताजुल उलमा मौलवी सय्यद अबुल हसन नक़ी इब्ने शम्सुल उलमा सय्यद इब्राहीम इब्ने मुमताजुल उलमा मौलवी सय्यद तक़ी इब्ने सय्यदुल उलमा मौलवी सय्यद हुसैन इब्ने सय्यद दिलदार अली खानदाने इजतेहाद का यह सिलसिला अपने ज्ञानी दबदबे, दीनी खिदमात और वतन दोस्ती की वजह से शाही काल में भी सम्मान और ख्याति रखता था और उसकी यह रवायत आज भी बाक़ी है। सय्यदुल उलमा की बिस्मिल्लाह (शिक्षा का विधिवत प्रारम्भ) नजफ़े अशरफ़ में हज़रत अली इब्ने अबीतालिब अलैहिस्ससलाम के रौज़े पर हुई। उन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता और लखनऊ के दूसरे उलमा–ए–दीन से ग्रहण की और जामे नाज़मिया से 'मुमताजुल अफ़ाज़िल', सुल्तानुल मदारिस से सद्रूल अफ़ाज़िल, इलाहाबाद बोर्ड से आलिम और लखनऊ यूनीवर्सिटी से फ़ाज़िले अदब की परीक्षाओं में सम्मान के साथ कामयाब हुए। विद्यार्थी काल से ही उनकी विलक्षण प्रतिभा प्रकट होने लगी थी और उन्होंने अरबी में लेख लिखना ओर शायरी शुरू कर दी थी। उसी तालिब इल्मी के दौरान एक सभा में उन्होंने अरबी में फिल बदीह शेर कहकर श्रोताओं को अचम्भित कर दिया था।

1927 ई0 में इन विद्यालयों से शिक्षा पूरी करके सय्यदुल उलमा आगे की शिक्षा के लिए नजफे अशरफ़, इराक़ तशरीफ़ ले गये। वहां उन्होंने पाठ्यक्रम की अंतिम किताबों में 'रसायल' आयतुल्लाह सिब्तुश शेख़ (पुस्तक के लेखक के नवासे) से, 'मकासिब' आयतुल्लाह नूरी से, 'किफ़ायतुल उसूल' आयतुल्लाह मिशक़ीनी से पढ़ी। इन बुजुर्गों के अलावा उन्होंने आयतुल्लाह अबुल हसन इस्फ़हानी वग़ैरह के दर्से ख़ारिज में भी शिरकत की। आयतुल्लाह मिशकीनी ने किताब किफ़ायतुल उसूल का हाशिया लिखा था। उनको सय्यदुल उलमा के अरबी ज्ञान और इल्मी योग्यता पर इतना भरोसा था कि उन्होंने अपने शिष्य से उस पर नज़रे सानी कराई।

नजफ़ के विद्यार्थी काल में सय्यदुल उलमा ने अरबी में तीन किताबे ''अक़ालतुल आशिर फ़ी अक़ामतश शआएर', 'अलजअत फ़ी

इस्बातुर रजअत' और 'कशफ़ुन नक़ाब अन अक़ायदि इब्ने अब्दिल वह्हाब'' लिखीं जो नजफ ही से प्रकाशित हुईं और इल्मी और दीनी हलक़ों में बड़े सम्मान की दृष्टि से देखी गई।

नजफ़े अशरफ़ में पांच साल रहने और वहां से इजतेहाद के अनुमति पत्रों की प्राप्ति के बाद सय्यदुल उलमा हिन्दुस्तान वापस आये तो उनके सीने में ज्ञान व मारफ़त का दरिया लहरें ले रहा था। दूसरी तरफ़ उन में दुनिया को अपनी कलमी योगयता से लाभ पंहुचाने के साथ दीन की सेवा करने की लगन भी पैदा हो गई थी। उस वक्त उनके सामने तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य थे जिन को प्राप्त करने के लिए वह अपने जीवन को वक़्फ़ कर देना चाहते थेः–

1. दूसरी क़ौमों में इस्लाम का परिचय कराना और मक़बूल कराना

2. मुस्लिम समाज (समाजिक जीवन) का सुधार

3. मुसलमानों की बीच एकता।

bekfe;k fe'ku %

वतन वापसी के दूसरे साल (1351 हि0) में उन्होंने लखनऊ में एक तब्लीग़ी और इशाअती इदारा (प्रचार प्रकाशन संस्था) इमामिया मिशन के नाम से स्थापित किया जिसने सैकड़ों की संख्या में उपयोगी किताबें छापकर उनकी लाखों जिल्दें हिन्दुस्तान तथा बाहरी मुल्कों में फैला दीं। इसके अलावा उन्होंने एक उर्दू समाचार पत्र ''पयामे इस्लाम'' और अरबी पत्रिका 'अर रिज़वान' जारी किया। 'अर रिज़वान' में उनकी अरबी तफ़सीरे कुरआन भी प्रकाशित हुई थी। इमामिया मिशन के प्रकाशनों में अधिकतर हिस्सा सय्यदुल उलमा ही के लेखन का होता था। इसी के साथ उन्होंने अपने यहाँ की मस्जिद और मदरसतुल वायज़ीन में प्रवचनों का सिलसिला शुरू किया और उन्हें लखनऊ के बाहर भी प्रवचन देने के लिए बुलाया जाने लगा। कम समय में ही उनका इल्मी दबदबा सबको महसूस होने लगा और उनके स्वार्थ रहित व्यक्तित्व ने सबको प्रभावित करना शुरू कर दिया।

1933 ई0 में सय्युदल उलमा लखनऊ यूनिवर्सिटी के पूर्वी उलूम के विभाग में उस्ताद नियुक्त हो गये थे। विश्वविद्यालय के शिक्षकों में प्रोफेसर वहीद मिर्ज़ा, प्रोफेसर सय्यद मसऊद हसन रिज़वी अदीब और प्रोफेसर सय्यद एहतेशाम हुसैन आदि से उनका गहरा मेल जोल था। विशेषतया 'अदीब' मरहूम उनका बड़ा सम्मान करते थे और उन्हें बहुत प्रिय रखते थे। यहीं सय्यदुल उलमा के मस्तिष्क में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की तेरह सौ साला यादगार मनाने का ख़याल पैदा हुआ और इस उद्देश्य से उन्होंने अन्जुमने यादगारे हुसैनी की स्थापना की। अन्जुमन के व्यवस्थापक की हैसियत से उन्होंने हिन्दुस्तान के विभिन्न शहरों के दौरे किये और जगह जगह तक़रीरें करके हुसैनी कारनामे का महत्व और करबला के वाक़िये के दूरगामी प्रभाव पर इस अन्दाज़ से रौशनी डाली कि आधुनिक तालीम याफ्ता आज़ाद ख़याल ज़ेहनों और ग़ैर मज़हब वालों के दिलों में भी यह एहसास बेदार हो गया कि करबला का वाक़िआ सिर्फ़ एक मज़हबी शख़सियत का अल्मिया नहीं था बल्कि मानवता के बड़े कारनामों और सबसे अहम घटनाओं मे से था।

यादगारे हुसैनी विभिन्न धर्मों ओर अक़ीदों के लोगों की संयुक्त संस्था थी और इसके उद्देश्य किसी एक समुदाय में सीमित न होकर बैनुल अक़वामी (अन्तर्राष्ट्रीय) थे। इस संयुक्त संस्था की ओर से दुनिया को इमाम हुसैन और करबला के वाक़िये से परिचित कराने के लिए एक मुकम्मल किताब के प्रकाशन का निर्णय लिया गया। इस किताब की तैयारी सय्यदुल उलमा के ज़िम्मे की गई और उन्होंने शहीदे इन्सानियत के नाम से एक ज़ख़ीम किताब तरतीब देकर अन्जुमन को पेश की। आम राय लेने के उद्देश्य से इस किताब को मस्विदे के तौर पर

छपवाया गया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग उसे पढ़ कर अपनी राय प्रकट करें और सुझाव दें जिनकी रौशनी में उपयुक्त सुधार और परिवर्तन करने के बाद अस्ल किताब के रूप में बड़े पैमाने पर उसे प्रकाशित किया जाए। इस मस्विदे के कुछ अंशों का विरोध किया गया और यह इख़्तिलाफ़े राय बजाए सुझाव के क्रोध के रूप में सामने आया। ज़ातियात और राजनीती के मिश्रण ने इस मसले को इल्मी बहस की जगह अवामी झगड़ा बना दिया और सय्यदुल उलमा की मुखालिफ़त (विरोध) का ऐसा तूफ़ान उठा कि एक लम्बे काल तक उनकी जान और स्थान को ख़तरा रहा। उनके अक़ायद के बारे में तरह तरह की अफ़वाहें फैल गईं और उनके व्यक्तित्व को बुरी तरह मस्ख़ (खंण्डित) किया गया। और कोई होता तो इस स्थित से उसका दिल और दिमाग़ पलट जाता और उसकी क्षमताऐं क्षीण हो जातीं तथा उसका उत्साह हमेशा के लिए ठंडा पड़ जाता लेकिन सय्यदुल उलमा ने अश्चर्यजनक धैर्य और स्थायित्व का परिचय दिया और इस हौलनाक तूफ़ान का सामना किया और इस बला को अपने ऊपर से गुज़रने दिया। उनके इल्मी कामों में कोई फर्क़ नहीं आया और वह उसी तरह मन की एकाग्रता के साथ लेखन एंव सम्पादन कार्यों में व्यस्त रहे। अलबत्ता उन्होंने नजफ से आने के बाद जिन कार्यक्रमों के मन्सूबे बनाये थे उन की तरफ़ से ध्यान हटा कर अपनी सारी वैचारिक शक्तियों को लेखन और भाषण पर केन्द्रित कर दिया। मवायज़ (उपदेश) में उनके श्रोताओं का क्षेत्र सीमित था। लेकिन अब उन्होंने मजलिसे अज़ा में ज़ाकरी शुरू की और यह क्षेत्र बहुत विस्तृत होता गया। उनकी मजलिसों में शिरकत करना एक खुशगवार और आध्यात्मिक अनुभव होता था और इसकी उम्मीद कम है कि उनका सा ज़ाकिर फिर कभी मिम्बर की ज़ीनत बने।

उनकी हर मजलिस किसी न किसी विशेष और महत्वपूर्ण (और कुछ अवसरों पर उसी समय दिये गये) विषय पर होती थी जिस से वह हटते नहीं थे और साधारणतया मसायब के बयान तक को अपने विषय से जुड़ा रखते थे। बात को पेश करने का तर्क प्रधान तरीक़ा, शगुफ्ता जुबान, नपे तुले शब्द, बारीक और गहरे बिन्दु को आसान बना देना उनकी खिताबत की विशेषताएं थी। इन मजलिसों से अन्दाज़ा होता है कि उनको भाषा पर कैसा पूर्ण वर्चस्व प्राप्त था। अपना अर्थ प्रकट करने के लिए सबसे श्रेष्ट एंव उपयुक्त शब्द उनकी ज़बान पर तुरन्त आ जाते थे। मिम्बर पर कभी कभी वह उच्चकोटि के व्यंग का प्रदर्शन इस तरह करते थे कि उनके बयान की गम्भीरता में ज़रा फ़र्क न आता था। इन मजलिसों के माध्यम से सय्यदुल उलमा ने अनगिनत ज़ेहनों की तरबियत की और उनके बयानात इस्लामी ज्ञान की पाठशाला का काम करते थे। इन भाषणों ने उन्हें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में बहुत लोकप्रिय व प्रतिष्ठित बना दिया था और मज़हबी विषयों को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करना उनकी वह विशेषता थी जिसकी वजह से 'नियाज़' फतेहपुरी और 'जोश' मलिहाबादी के से ''बुद्धिमत्तावादी'' भी उनके गिरवीदा (प्रशंसक) थे।

t Kfdjh %

ज़ाकिरी की हैसियत से सय्यदुल उलमा की बढ़ती हुई मसरूफियत को देखकर उनके कुछ मित्र व शुभचिन्तक यह अन्देशा महसूस करने में हक़ बजानिब थे कि यह तक़रीरी सरगर्मियाँ उनके लेखन कार्य पर प्रभाव डालेंगी और अब उनकी लेखन व सम्पादन की गति कम हो जायेगी। लेकिन यह शंका सही साबित नहीं हुई और सय्यदुल उलमा की किताबों पर किताबें प्रकाशित होती रहीं वह सुबह से बारह बजे तक लिखने पढ़ने में व्यस्त रहते थे और इस अनुपात से ज़ाकिरी में उनके वक्त का बहुत कम हिस्सा सर्फ़ (व्यय) होता था। वह एक साथ कई लेखन कार्य हाथ में लेते थे और जब एक किताब लिखते लिखते थक जाते तो दूसरी किताब में लग जाते

थे। यह उनके ताज़ा दम होने की एक सूरत थी। उनकी ज़ाकरी भी ऐसी ही एक सूरत थी । इसके अतिरिक्त उनकी विभिन्न मजलिसों के भाषण रिकार्ड करके लिखित रूप में प्रकाशित कर दिए गए हैं और उच्चस्तरीय इल्मी किताबों की हैसियत रखते हैं। अभी उनके प्रशंसकों के पास बड़ी संख्या में उनके बयानात रिकार्ड किये हुए सुरक्षित हैं। उन सबको लिखित रूप में लाकर प्रकाशित किया जाए तो सय्यदुल उलमा की किताबों की संख्या में बहुत बढ़ोत्तरी हो सकती है।

1959 ई0 में सय्यदूल उलमा की नियुक्ति अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के दीनियात विभाग में रीडर की हैसियत से यूँ हुई कि उन्होंने इस जगह के लिए प्रार्थनापत्र नहीं दिया था वरन् मुस्लिम यूनिवर्सिटी ने उनसे अनुरोध किया था कि वह इस जगह को स्वीकार कर लें। कुछ समय बाद वह इसी विभाग में प्रोफ़ेसर फिर दीनियात फैकल्टी के डीन नियुक्त हुए। सेवानिवृत्ति के पश्चात युनीवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन ने उनको रिसर्च प्रोफ़ेसर नियुक्त कर दिया और इस हैसियत में वह कई वर्षों तक दीनियात के विभाग से सम्बन्धित रहे।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी मुस्लिम विद्वता (बुद्धिजीविता) का एक केन्द्र है। इस मरकज़ में सय्यदुल उलमा को बड़ी लोकप्रियता मिली। शिक्षा और प्रशिक्षण के अतिरिक्त यहां उन्होंने विभिन्न अवसरों पर जो भाषण दिये वे सुनने वालों के लिए नाक़ाबिले फ़रामोश सिद्ध हुए। इसके अलावा उनकी ज्ञान प्रदान करने की क्षमता, उनकी सन्तुष्टि पसन्द तबीयत और उनका साफ़ और स्वच्छ चरित्र और हर प्रकार की राजनीति से दूर रहने ने ज़हनों और दिलों पर गहरा प्रभाव डाला।

y§ku %

सय्यदुल उलमा की लिखी व संकलित की हुई किताबों की संख्या तीन सौ और चार सौ के बीच है। उनकी किताबों के विषयों की विभिन्नता आश्चर्य चकित करने वाली है और हर पुस्तक अपने विषय पर पूरी दक्षता प्रकट करती है। आप पाठकों के लिए भी इन किताबों में शिक्षा के अनगिनत पहलू हैं लेकिन उनका सही मूल्यांकन वही लोग कर सकते हैं जो स्वयं ज्ञान के उच्च स्तर पर हों। इनमें से कुछ किताबें निम्नलिखित हैं :

तहरीफ़े क़ुरआन की हक़ीक़त, तज़किर–ए–हुफ़्फ़ाज़े शिया, तरजुम–ए–क़ुरआन, मुक़दम–ए–तफ़सीरे क़ुरआन, तफ़सीरे क़ुरआन (सात जिल्दें) क़ुरआन के बैनुल अक़वामी इरशादात, खुदा की मारेफ़त, तौहीद, अद्ल, नुबुव्वत, मआद, जब्र व इख़्तियार, ख़िलाफ़त व इमामत, निज़ामे ज़िन्दगी, इस्लाम की हक़ीमाना ज़िन्दगी, इस्लाम और इन्सानियत, तिजारत और इस्लाम, मुस्लिम पर्सनल लॉ नाक़ाबिले तबदील, मुताअः और इस्लाम, हमारे रुसूमो क़ुयूद, शादी खाना आबादी, ला तुफ़सेदू फिल अर्ज़, इत्तेहादे बैनुल मुस्लेमीन, शहीदे इन्सानियत, मुजाहिदए करबला, हुसैन और इस्लाम, शुहदा–ए–करबला, हुसैन का पैग़ाम आलमे इन्सानियत के नाम, हलाकत व शहादत, फ़लसफ़–ए–गिरया, जनाब गुफ़रानमआब, चहारदह मासूमीन की सवानेह उमरियाँ (14 किताबें), दुनिया आख़िरत की खेती, सजदागाह, सफ़रनाम–ए–हज आदि।

किताब शहीदे इन्सानियत और तफ़सीरे क़ुरआन का शुमार सय्यदुल उलमा के प्रमुख कार्यों में होता है। किताब ''शहीदे इन्सानियत'' के बारे में आम राय है कि वाक़िय–ए–करबला और सीरते इमाम हुसैन[अ०] अलैहिस्सलाम पर इतनी जामे (सर्वांगीर्ण) किताब दुनिया की किसी ज़बान में नहीं लिखी गईं। इस किताब के मसविदे के प्रकाशन के बाद जो सूरते हाल पैदा हुई उसके पेशे नज़र सय्यदुल उलमा ने मसविदे को वापस ले लिया था। नज़रेसानी के बाद जब उन्होंने किताब को एक मुस्तक़िल तालीफ़ (स्थाई संकलन)

की हैसियत से प्रकाशित किया तो बहुतों को यह आशा थी कि उसके पेशलफ़्ज़ (पृष्ठ भूमि) में वह बड़े विस्तार से उन हालात और घटनाओं का वर्णन करेंगे जो मसविदे के प्रकाशन से जुड़े हुए थे। लेकिन जब किताब सामने आई तो उसके पेश लफ्ज़ के चमत्कार और संक्षिप्तता ने पाठकों को अचम्भित कर दिया। चूंकि यह पेश लफ्ज़ सय्यदुल उलमा की आला ज़र्फ़ी (उच्च मानसिकता) के साथ उर्दू भाषा पर उनके प्रभुत्व का भी उम्दा नमूना है इसलिए निम्न में अक्षरतः प्रस्तुत किया जाता है :

''बफ़ज़्ले इलाही अब उसकी तौफ़ीक़ से वह हंगाम (समय) आ गया कि 'शहीदे इन्सानियत' अस्ल किताब की शक्ल में मंज़रे आम पर लाई जा सके। किताब के मस्विदे की बग़रज़े इस्तेस्वाब इशाअत के बाद जिन अफराद ने नरम व गरम मुखतलिफ़ लहजों और तामीरी (सकारात्मक) व तख़रीबी (नकारात्मक) मुख़तलिफ़ सूरतों से अपने ख़यालात का इज़हार फ़रमाया वह सब ही शुक्रिये के मुस्तहक़ हैं और इस एडीशन में अस्ल मक़सदे किताब और नश्रे हुसैनियत के अहम मफ़ादात का तहफ्फ़ुज़ करते हुए जहां तक मुमिकिन था उन सब का लिहाज़ किया गया है''

oLl yke

vyhudhmu udoh ^mf¶Q;* vugw

तफ़सीरे कुरआन सय्यदुल उलमा की तमाम उम्र की इल्मी रियाज़तों और सलाहियतों का फल है और उसको इस्लामी उलूम (ज्ञान) और मआरिफ़ (ज्ञान और कला) का भण्डार कहा जाता सकता है। अगर उनकी लेखनी के चिन्ह के रूप में केवल यही एक काम होता तो भी उनकी गिन्ती इस्लाम के प्रचण्ड आलिमों तथा विद्वानों में होती।

इन इल्मी कारनामों ने सय्यदुल उलमा के अन्य अदबी कमालात को पृष्ठभूमि में डाल दिया। वह अरबी के दक्ष और साहबे दीवान कवि थे। उनका दीवान और अरबी कसीदे का संग्रह बेरूत और क़ाहिरा से प्रकाशित हुआ। उन्होंने मीर 'अनीस' के शाहकार मरसिये ''जब क़त्आ की मसाफ़ते शब आफ़ताब ने''का अरबी काव्य में अनुवाद किया। अस्ल मरसिये की तरह यह अनुवाद भी मुसद्दस की श्रेणी मे है और इस लिहाज़ से अरबी शायरी में एक अद्भुत और अद्वीतीय कृति है। वह उर्दू और फारसी में भी शेर कहते थे और उन दोनों भाषाओं में उन्होंने अनेक मरसिये, नौहे, क़सीदे इत्यादि लिखे जो अधिकतर दूसरों के नाम से मन्सूब हुए। इसके अलावा उन्हें तारीख़गोई में भी बड़ी महारत हासिल थी विशेषतया अरबी में उन्होंने बरजस्ता तारीखें कहीं हैं।

लेखन और संकलन के अतिरिक्त सय्यदुल उलमा की एक अहम यादगार उनके बेटे डॉ0 मौलाना सय्यद अली मुहम्मद नक़वी साहब हैं जिनकी तालीम और तरबियत में उन्होंने बड़ी मेहनत की और जिन पर मीर अनीस का यह मिसरा सादिक़ आता है :

बेटा वह है क़दम ब क़दम हो जो बाप के

अली मोहम्मद साहब अंग्रेज़ी और अरबी के फ़ारिगुत तहसील हैं और प्राचीन और समकालीन उलूम (विधाओं) पर उनकी गहरी नज़र है। ईरान से उनकी ग्यारह किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से आठ शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल हैं। यक़ीन है कि वह अपने पिता जी की इल्मी रवायत को आगे बढ़ाएंगे।

vkf[kjh l e; %

मुत्यु के कुछ समय पूर्व उनका स्वास्थ बिगड़ गया और उनकी कमज़ोरी बढ़ती जा रही थी। अली मोहम्मद साहब ने उनके इलाज और तीमारदारी में कोई कसर नहीं छोड़ी और उनके स्वास्थ में कुछ कुछ बेहतरी के चिन्ह नज़र आने लगे थे। लेकिन निश्चित समय निकट आता जा रहा था। आख़िर उनकी स्थिति चिन्ता जनक हो गयी और उन्हें बलरामपुर चिकित्सालय में भरती

कराया गया जहाँ 17 और 18 मई 1988 की मध्य रात्रि में 1 बजकर 35 मिनट पर उनका निधन हो गया।

18 मई को सांय चार बजे इमामबाड़ा सय्यद तक़ी साहब जन्नतमआब लखनऊ से मिली हुई मस्जिद में वह दफ्न हुए।

सय्यदुल उलमा मौलाना सय्यद अली नक़ी साहब मरहूम उन इल्मी शख्सियतों में थे जिनको नाबग़-ए-रोज़गार कहा जा सकता है। उनकी मंज़िलत का पूरा अन्दाज़ा अभी तक इसलिए नहीं किया जा सका है कि वह हमारे समकालीन थे। और कभी कभी जब कोई चीज़ आंखों के बहुत करीब होती है तो उसके पूरे नक़्श ठीक से नज़र नहीं आते। मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ने कहा था :

तू ए के महवे सुख़न गुस्तरांने पेशीनी
मबाश मुन्किरे ग़ालिब कि दर ज़मानइ तुस्त

"ऐ गुज़श्ता सुखनवरों मे रहने वाले महज़ इस बिना पर ग़ालिब का इंकार न कर कि वह तेरे ही ज़माने में है।" अब जबकि सय्यदुल उलमा हमारे ज़माने में नहीं रहे ओर गुज़रे हुओं में शामिल हो गये हैं, यक़ीन है कि उनके इल्मी असर और प्रभाव का एक नया और लम्बा दौर प्रारम्भ होगा जो पिछले दौर से अधिक चमकदार होगा।

d#vkrs rkjh[k% bjrgky eks gkuk l ;n vyh udh udoh lkgc

1. शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी साहब द्वारा लिखित क़तअ-ए-तारीख़

हदीसो इल्म कलामे खुदा व ज़िक्रे इमाम
ज़े बूए ऊस्त मुअत्तर हज़ार हा गुलशन।
चूँऊ बरफ़्त दिल अज़ दस्त मुलको मिल्लत रफ़्त
'चसां तहम्मुल ईं दाग़ बे दिली करदन।'

1988 ई0

2- gkfQt + ft ;+kmn nhu 'kEl h rgjkuh }kjk fyf[kr d#v&,&rkjh[k+%

छाया हुआ फिज़ा में इक इरतेआश है
संगे अलम से शीश-ए-दिल पाश पाश है।
हर सांस है कि चुभती हुई एक ख़राश है
यह बुलबुलों के दोश पर किस गुल की लाश है।
पूछा जो मैंने कौन यह आली जनाब हैं
हातिफ पुकार उठा 'दिले गुफ़रानमआब' हैं।
गुफ़रानमआब कौन ? वह दानाये रोज़गार
वह शिईय्यत का हिन्द में सरमाय-ए-वक़ार।
वह फ़िक़्हे जाफ़री का दमकता हुआ मिनार
वह गुमरहों के हक़ में हिदायत की इक पुकार।
वह मुजतहिद कि साय-ए-ईज़द कहें जिसे
इस्लाम की जबाँ में मुजद्दिद कहें जिसे।
हाँ था उसी चमन की कली वह अली नक़ी
शह राहे हक़ थी जिसकी गली वह अली नक़ी।
रूहे वफ़ा का नक्शे जली वह अली नक़ी
सरता क़दम विलाये अली वह अली नक़ी।
तारीख़ के लिए जो मेरा दिल था चाक चाक
हातिफ़ पुकारा 'गंजे इमामत' है ज़ेरे ख़ाक'।

1408 हि0

3- ekSgfl u udoh }kjk fyf[kr d#v&,&rkjh[k+

^fd rkcs vey**

डूबी हुई अलम में सहर, ग़म में शाम है
दामन में आंधियों के अज़ल का पयाम है।
है रेहलते फ़क़ीह, नक़ी जिसका नाम है
जिसका बेहिश्तयों में बड़ा एहतेराम है।
इब्ने अबुल हसन था अमल की किताब था
वह इस सदी का अस्ल में गुफ़राँमआब था।

+++

क़त्आ

विश्व नाथ प्रशाद माथुर लखनवी

ऐ मुरतज़ा ये हद है कि किब्ला बना दिया
ख़ालिक़ ने अपने घर को तुम्हारा बना दिया
क्यों कर जबीं तक आयें न अनवारे किबरिया
हर सजदे को खुलूस की दुनिया बना दिया
माथुर भी इतना समझा हक़ीक़त को या अली
रख्खो जहाँ कदम वहीं काबा बना दिया

हज़रत पैग़म्बर (स०) का आचरण और ज्ञान

ekSykuk l9 ulhj bTrgknh ikfdLrku

जब हम हज़रत पैग़म्बर (स०), हमारे प्राण उन पर न्योछावर हों, की व्यवहारिक जिन्दग़ी पर नज़र डालते हैं तो क़दम–क़दम पर हमें ऐसे आसार नज़र आते हैं कि हुज़ूर (स०) ने ज्ञान के प्रचार प्रसार में असाधारण सक्रियता दिखायी है। ऐसा राष्ट्र जो शास्त्रों की प्रारम्भिकी (उलूम की मबादीयात) लिखने पढ़ने से भी महरूम था उसके सामने ज्ञान विज्ञान के सागर बहा के रख दिये और उसका यह असर हुआ कि जाहिल और गंवार अरब ज्ञान से इतना मालामाल हुये कि 'ईरान और 'रोमा' की सभ्यताएं भी उनके सामने मांद पड़ गयीं और इस्लामी पाठशालायें और शिक्षण केन्द्र इतना प्रगति कर गये कि दुनिया भर के ज्ञान के प्यासे इन्हीं केन्द्रों के यश से अपनी प्यास बुझाने लगे। हुजूर (स०) ने अपनी पुनीत शिक्षाओं से मानवता को ज्ञानार्जन की राह पर लगा दिया और प्रत्येक मुसलमान के लिए ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया। चुनांचे हज़रत (स०) ने अपने बहुमूल्य कथन, प्रत्येक मुसलमान पर ज्ञानार्जन वाजिब है'' द्वारा इसकी अनिवार्यता पर मुहर लगा दी और सामान्य मानस में यह बात बिठा दी कि मानवता के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में ज्ञानार्जन का वही स्थान है जो मानव काया में आत्मा का है। किसी एक को भी इससे मुक्ति नहीं दी फिर मज़े की बात यह है कि उस के लिए, अवस्था, काल आदि का बन्धन भी तोड़ दिया। फर्माया कि ''बचपन से जीवन के अन्तिम क्षण तक ज्ञान प्राप्त करते रहो। ''नतीजा यह हाथ लगा कि झूले से ले के गोर किनारे तक एक क्षण भी तो ऐसा नहीं जिसमें इस कर्तव्य की अनिवार्यता न रहती हो। प्रत्येक क्षण एक दीनदार मुसलमान का कर्तव्य है कि वह अपनी शास्त्रीय योग्यता बढ़ाने में इतनी सक्रियता दिखाये जो कर्तव्य पालन से मेल खाती हो। क्या मुसलमान इधर ध्यान देंगे?

फिर भौगोलिक हदबन्दियों में भी विशालता पैदा कर दी कि जहां भी तुम्हें ज्ञान मिले चाहे वह संसार के दूर दराज़ भूखण्डों में क्यों न हो, हिम्मत के क़दमों में सुस्ती और भारी पन न आने पाये। ''इल्म हासिल करो चाहे तुम्हें चीन ही क्यों न जाना पड़े'' इस महत्वपूर्ण मानव कर्तव्य की महत्ता हुजूर (स०) ने कदम–कदम पर बतायी है। ज्ञान की लाभकारिता और विद्वानों के मान मर्यादा से आगाह किया है। चुनांचे एक जगह पर विद्वानों को पैग़म्बरों का वारिस ठहराया है। पैग़म्बरों का मिशन भी ज्ञान–विज्ञान का प्रसार था। उनका मन्तव्य भी मानव अज्ञान की अंधियारी के पर्दों को ज्ञान ज्योति से चाक करना था उलमा उनके ज्ञान और यथार्थ के अमानतदार होते हैं। यह इल्मी मीरास उनको पहुंचती है। बेशक यह मांगलिकता उनकी महिमा बढ़ाती है उनकी ज़िम्मेदारियों में भी बहुत बड़ी वृद्धि हो जाती है। तभी वह सच्चे अर्थों में कोषधारी और अमानतदार हो सकते हैं जब उत्तराधिकार के हक को ठीक–ठीक काम में लायें। मानव जाति में पैग़म्बरों से बढ़ के तो कोई और है नहीं और उलमा का वारिस होना बहुत बड़े सम्मान का प्रमाण है जो ज्ञान का ऋणी है। दूसरे शब्दों में यूं समझें कि वास्तव में यह ज्ञान और विज्ञान ही का मान–सम्मान है और उसी की महिमा। हुजूर (स०) के इस शुभकथन का अर्थ ही यह हुआ कि मानवता ज्ञान द्वारा ही अपनी पराकाष्ठा को

पहुंचती है और इसी के प्रकाशमय दीप से प्रत्येक अंधेरा स्थान प्रकाशित हो सकता है।

हुजूर (स०), मेरा प्राण उन पर न्योछावर, की एक हदीस में आया है कि आप ने यूँ दुआ की कि, खुदा वन्दा ! मेरे उत्तराधिकारियों पर दया कर'' पूछा गया, हुजूर (स०) आप के वह उत्तराधिकारी कौन हैं? इर्शाद फरमाया, मेरे खलीफा (पदाधिकारीगण,) जो मेरी शिक्षाओं, हदीसों, आचार–विचार का प्रसार करेंगे और मेरे विचार लोगों तक पहुचायेंगे। ''इन हदीसों में भी ज्ञानियों–विज्ञानियों के रूतबे की बलन्दी और महिमा की ओर सूक्ष्म संकेत हैं और इससे ज्ञान के मुल्य–मर्यादा का पता चलता है। मानवता के आखिरी पैग़म्बर के उत्तराधिकार और जानशीनी की ऊंचाइयों को ज़रा सामने रखिए। इसके प्रसंग में ज्ञान की जो महिमा समझ में आती है उसका भी अन्दाजा फ़रमाइये। जरा इन ''उत्तराधिकारियों'' से भी परिचित होते चलें कि यह कौन हैं? मशहूर हदीस ''मैं ज्ञान का नगर हूं और अली उसका दरवाजा'' उनसे परिचित कराने के लिए पर्याप्त है। और हज़रत अली (अ०) के इस कथन से कि ''हज़रत (स०) ने मुझको ज्ञान यूँ भराया जैसे चिड़िया बच्चे को दाना भराती है।'' पहचान लीजिए, यह अहल–ए–बैत का (अ०) ओहदा है जिनके ज्ञान के सोते पैग़म्बर (स०) के ज्ञान की सरिता से फूटते हैं। जिनकी नूरानी क़िन्दीलें पैग़म्बरी ज्ञान की मश्अल से प्रज्वलित हुयी हैं। पैग़म्बर (स०) के आचार–विचार के यह मुकम्मल नमूने थे। इन्हीं के दम क़दम से पैग़म्बर (स०) की हदीसों और शिक्षाओं का विस्तार हुआ और यही वह हक़ीकी उत्तराधिकारी (खुलफा) हैं।

हज़रत अबूज़र ग़फारी इस्लाम की एक नामवर हस्ती है। हज़रत पैग़म्बर (स०) के सहाबियों में उनकी एक विशेष महिमा है। उन महिमामयी सहाबियों में से हैं जिनके लिए जन्नत स्वंय उत्सुक है। उनके महिमामयी स्थान का अनुमान हज़रत पैग़म्बर (स०) की हदीसों से होता है। हुज़ूर (स०) ने आप को सम्बोधित करके फ़रमाया, ''हे अबूज़र ! एक घड़ी ऐसी गोष्ठी में बैठना जहां ज्ञान की बातें हो रही हों ज़ियादा अच्छा और अल्लाह को ज़ियादा प्रिय है हज़ार रातें जाग के उपासना करने से। और रातें भी ऐसी कि जिनमें हज़ार–हज़ार रक्अत नमाज़ अदा की गयी हो। और यह हज़ार बार खुदा की राह में जिहाद करने से भी बेहतर है और बारह हज़ार कुरआन के पाठ से भी ज्यादा अच्छी है। एक साल की ऐसी इबादतों से भी अच्छी है जिसके दिनों में आदमी रोज़ा रखे और रातों को जाग के इबादत करे । हे अबूज़र ! जो कोई अपने घर से कोई शास्त्रीय प्रश्न सीखने का इरादा करके निकलता है या ज्ञानार्जन के लिए प्रस्थान करता है उसे प्रत्येक पग पर जिसे वह उठाता है एक पैग़म्बर का सवाब मिलता है और बद्र के शहीदों के समतुल्य हज़ार शहीदों के बराबर बदला मिलता है। प्रत्येक अक्षर जो किसी आलिम से सुनता है, ग्रहण करता है और लिखता है उसके बदले में उसे स्वर्ग में एक नगर प्रदान किया जाता है। एक विद्यार्थी की इससे बढ़के क्या मांगलिकता होगी कि अल्लाह उसको दोस्त रखता है फरिश्ते और पैग़म्बर उस से प्रेम करते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हर शुभ और मंगलमयी व्यक्ति उस से प्रेम और स्नेह का सम्बन्ध रखता है। विद्यार्थियों के सौभाग्य का क्या कहना! ज्ञानी के चेहरे पर नज़र करना हज़ारों गुलाम मुक्त करने से अच्छा है। ज्ञान प्रेमी के लिए बहिश्त (स्वर्ग) वाजिब हो जाती है। एक ज्ञान प्रेमी ऐसी दशा में सुब्ह शाम करता है कि खुदा की खुशी उस पर छायी हुई होती है। वह इहलोक नहीं त्यागता मगर यह कि उसे ''कौसर'' के पेय से तृप्त किया जाता है और उसे स्वर्ग के मीठे और पाक मेवे और फल खिलाये जाते हैं। मरने पर क़ब्र में उसे सांप बिच्छू नहीं खाते, उसका शव कीड़ों–मकोड़ों की खूराक नहीं बनता। जन्नत में वह हज़रत खिज़्र पैग़म्बर (अ०) का साथी और सहचर होगा।''

इस सर्व ग्राही हदीस पर विचार करें और कुरआने हक़ीम के शब्द ''खैर–ए–कसीर'' (नेकियों की बड़ी दौलत) को सामने रखिए, आप को मालूम होगा कि वाक़ई तमाम भलाईयां इसी से पैदा होती है और सब नेकियों की मुख्य जड़ यही ज्ञान है।



मुख्य समाचार

oDQ+ cpko vkUnksyu vkSj dk;nsfeYyr ekSykuk lS;n dYcs tokn

dk;nsfeYyr ekSykuk dYcs tokn udoh lkgc viusfirk lQ+h rq mYyekekSykuk lS;n dYcs vkfcn udoh jger evkc dh gj rgjhd ea mudslkFk lkFk jgsvkSj dbZckj tsy Hkh x;s ekSykuk dYcsvkfcn lkgc dslMd nqkZukes ngkUr dsckn mudh rgjhd dk;nsfeYyr ekSykuk dYcs tokn lkgc uslaHkkyhA gj lky vKkjvvkSj pgyeq dsfnu ,grsjkt hfxj¶rkfj;k¡ Hkh dk;nsfeYyr dst jsslijijLrhgkshjghA og bZjku esa'kg{kkxg.kdj jgsFksfd y[kuÅ eanks f'k;kukS okukaus, grsjkt u [kq lkts hdj yh ml oDr ekSykuk y[kuÅ vk;srks ;g nsjkdj vQ+lks vkSj g$r lsna jg x;sfd mu ukS okukadks mudsorueaxzHkhu fey ldh c?kjkeaifyl okykadst jh, t cjnLrhnQ+u djkfn;k x;kvkSj vkt cMscM+eq [kkyus okysml oDr lkjHkhu ylsdsmldsckn ekSykuk dst jh, t cjnLrr vkUnksyu pykftlds urht seavkt ;st qyw mB jgsgSA vcrt clsk vkgh x;kgSrksekSykukdh ,d t cjnLr f[kner dkftdzgkst k;sftllsn'kk;n vkt dscPps vkSj t oku ukokfdQ+ gkusvkSj og et fylkadk nkSjkk'kq djkukgSA t qywkaijikcUnhdsckn y[kuÅ dhvdlj vUt qeukavkSj cgqq lsvkfyeka ust ylkdjdsr; fd;kfd ge ,grsjkt u et fylaHkhugharjas,d lky y[kuÅ ea ,grsjkt u dkbZet fyl ughagbZdk;nsfeYyr ekSykuk dYcs tokn udoh lkgc ml oDr vkyW bf.M;k vyhdkabs dslnzFksmUgksasghrgjhd pyk;hfd et fylaa'kq dht k;aojukay[kuÅ easfljslsvt knkjh[kRe gkst k;xhbldsfy;s lekpkj i=kaeacMhcMh vihyaizdkf'kr djkbZ tksvkt Hkhlqjf{kr gSft ldsckn ;slkjh et fylaiq%iqjEHkgbZ;s,s hf[kner gSftls ftrukHkhlijkgkt k;sde gSA

oDQ+ leifRr;kadh f[knerkadsfl ylfl ysea dbZckravkSj fy[kh t kjghgSANkVsbeke cMs+ dhefLt n]lgfUp;kavkSj ckgj dsQkVd dh gkyr cgqq tjtj FkhekSykuk usmldsfy, izn'kZu fd;kftldsckn ejEer dkdk;Z'kq gqvkHkjrh; turkikVhZdsdk;Zdky eavo/k gkWVcukusdk ikbsDV cukftlesadSlj ckx+ls ysdj NkVsbeke cMs+rd i;ZVdkadsfy, i;ZVu LFky cuukFksrkfd nqfu;kHkj dsi;ZVd y[kuÅ vk ldabu i;ZVu LFkykaeaukp ?kj vkSj 'kkjkc [kkusoxSjk Hkh 'kkfey Fkst ksbeke cMkvkSj NkVsbeke cMsdscshp curs;sl sDVj gqvkrk dkikbsDV FkkexjekSykuk vdysne ijmldsf[kykQ+ mB [kMsgq vkSj ml ikbsDV dksfujLr djokdj ne fy;kvxj og ikbsDV iwjkgksx;kgksrkrksusflQZbeke cMkadsvkl ikl 'kjkc [kkusvkSj ukp ?kj gkrscfYd lkjs jkt kegkjkt kslMd ijgkrsA

Mkyhxat ea,d vfr lqUnj 'kkghefLtn gSftl ij dqN o"kkaigys,d ukehfxjkehekfQ+;kdk dCtkFkkefLtn eal kjh[kqjkQkr gksrhFkh;gk¡ rd fd e'kgjw Fkkfd cnek'kdkvLygk[kkuk Hkhogha gSA Mkyhxat dslkjsemqlyeku efLtn ea izoskl sofpr Fksogk¡dsemqlyekukadhnj[okLr ij dk;nsfeYyr us,yku fd;kfd og gtkjka emqlyekukadslkFkml efLtn eauekt+i<+us vkjgsgSaifj.kke Lo:i og efLtn emqlyekuka dksfey x;hvkSj vkt rd Mkyhxat dsemqlyeku dk;nsfeYyr dsvkHkkjhgSA

U;wgSajkcknsdslkeusxkserh unh dsdukjs vgyslqUur dhefLtn dksvoS/kfuekZkdgdj /oLr djk;kt kjgkFkkrksml le; Hkhdk;ns feYyr dsizn'kZu lsog efLtn lqjf{kr gbZA

T;knh cknQ ysi kdZ ds lkeus dh t ehu dsfy, cht sih ds,d rkdroj yhMj usuhy keh dk ,syku dj fn;k t ehu cjkcj djus ds fy, fcYMkst j + vkx; sml le; Hkhe k;Sfkuk usfo'kky i n'kZu fd;k ur hts eagq d ew r dksfy[kdj nsak i Mk fd ;sgh ;Sk cknV£V dh t ehu gSA efLt ns'kgnj kdhl RrkbZ cl?kkt ehu ek;korh ds dk;Zdky eavLi rky dsfy;sy hx;h Fkh dk;nsfeYyr usekgsjet ku eaogk;rhu fnu yxkrkj uekt +i<h bZ uekft ;ka dh HkhM+dh ot g l set ekl Md rd Fkket cjuu i fyl dks og dCt k [kky h djokuk i Mk vkt ogk;vfr l qhj efLt n dk fuekZk gkspqdk gSA oDQ+l Tt kfn;k ds fl y fl ysea ,d ckr jg x;h Fkh fd rgl hu xst fLFkr bl oDQ+ dh t ehu ij dbZ l ky Yk fuekZk dj k;sft l ds fuekZk dh jde ekSuku gh l sy h x;h bl rjg ekSuku dks de dher ij ?kj Hkh fey x;s vkS ut e eSk vkS fdjk;s dh jde l s oDQ+ dk Qk;nk gqk ft l dki jvkfgl kc jl hn ksa ds vk/kkj ij ekSt wn gSA ekSkuk dh f[kner ksa dk nk;jk ngyh rd Q§k gqk gSt gk;ekSkuk gh dh l j i j Lrh ea njxkg 'kkgsejnk; dh yxHkx 22000 ¼ckbZ gt kj½ Ldok; j eh Vj t ehu vkt kn gqbZft l dh dher dk dk bZvUnkt k gh ugha dj l drkA NkVh dcl Z kt gk;egYys dk dWk ?kj Fkk ml s vkt kn djok;kA njxkg 'kkgsejnk;gh ds dj hc uDdkj [kkus dh vfr l qhj bekjr dMs vkS feV Vh ds <sj eancha gqbZ Fkh ekSkuk ds hl j i j Lrh eavUt qus gSnj h ds l nL; ksa us bl i j dCt k fd;k vc og f'k;ksa ds i kl gS fl QZ;gh ugha njxkg 'kkgsejnk;ds dj hc ,d dukr hef Lt n gSt gk;nks l ky i gys rd vxj dkbZ f'k;k dne Hkh j [krk Fkk rks i qfyl 'kkfUr Hka ds ekey seafxjQ rkj dj y srh Fkh ekSkuk dh l j i j Lrh eaog efLt n vkt kn gqbZ i q% fuekZk Hkh gqk vkS vkt ogk;uekt +gks rh gSA ngyh gh eaegjkSy h ds sbyk ds eavgys cSr ds pkj efLt nkadks 'kgn gksus l s cpk;k vkS l § Mksavgys cSr i fjokj t ks c?kj gks x;s Fks mudks nksckjk cl ok;kA bl rjg ls eangyh ds dbZ vkfye vkS vUt quus gSnj h ds t oku cjkcj ds 'kj hd jgsA ekSkuk dk csel y dkjuke e 'kgjvuke k fuxkj vgen dkt eh l kgc ds fl y fl ysea rgjhd gSA vkrdokn ds bYt ke esai gyh ckj fdl h f'k;k dks fxjQ rkj fd;k x;k Fkk i j vh f'kbZ;r dk l j >qd x;k Fkk [k+kt ckadh t e kus xq gks x;h Fkha t ksMa ds dh pkV ij dg jgs Fks fd f'k;ksa ea dkbZ vkrdokn h ugha gSA ekSkuk us bl le; Hkh fo'kky vkUnksyu pyk;k ft l eaV kst ard jksdh x;h a vkS cgqq de le; ea mudks t s y l s vkt kn h fey x;h t ks ,d rkjh[kh t hr +dkjukek gSA ¼eut kfuc % & i zkkj h dk;kZ; et fyl s my ek &,& fgUn] y[kuÅ ½

इस्राईली अफ़सरों ने ग़ज़्ज़ा पट्टी के रहने वाले रहनुमाओं का रास्ता रोका

bl zkbZyh vQ l jksausfQ fy Lrhu dh ,d fl ;kl h t ekvr 'volkeh egkt +cjk;svkt kn fQ fy Lrhu* ds xT t k ds hi V Vh l s rv Yyd +j[kus okys [kkl jgue qkvka dks ed cw t kex fjchdukjseankf[ky s l sjksd fn;k gSvolkeh egkt +ds ylekx jeyk earra kesvkt kn fn;s fQ fy Lrhu ds ,d vge t Yl s ea f'kjdr dsfy, t k jgs FksA volkeh egkt +ds fl ;kl h {ks= ds ,d [kkl l nL; us crk;k fd mudh t ekvr ds xT t k dh i V Vh l s rv Yyd j[kus okys l kanh; l nL; t ehy eTn ykoh vkS ej;e l es dbZ vge fl ;kl h jgue qk 'kkey h xT t k dh cSsgkuw xqt + xkg l sex fjch fdukjseat kuk pkgrs Fks y sdu l g;wnh vQ l jksausmUgajksdrs l sjksd fn;kA vyxyw uscrk;k fd mudh t ekvr dksjkey k earra kesvkt kfn&,&fQ fy Lrhu ds ,d [kkl t Yl s eavke a=r fd;k x;k FkkA